

THE OXFORD COLLEGE OF SCIENCE

# हिन्दी परियोजना कार्य

विषय :- ग्लोबल वार्मिंग (वैश्विक तापमान)

Submitted to :-

डॉ. सुरेश राठोड़

Hindi department.

Submitted by :-

नाम : के. बी. सुमन

B.Sc (C.Z.Bt) 3<sup>rd</sup> sem.

19RNS85019

2020-21.



# सूची

Page. No.  
1-2

1. क्या है ग्लोबल वार्मिंग। 2-4
2. कार्बन 5
3. धातक परिपालन 6
4. जागरूकता 7-8
5. ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन। 9-10
6. रोकने का उपाय।

## क्या है ग्लोबल वार्मिंग?

आसान शब्दों में समझो तो ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ है "पृथ्वी की तापमान में वृद्धि और इसके कारण मौसम में होने वाले परिवर्तन। पृथ्वी के तापमान में हो रही इस वृद्धि [जिसे 100 सालों के औसत तापमान पर  $1^{\circ}$  का इनहाईट औंका गया है] के परिणाम के पिछले, अमुद्र के जलस्तर में वृद्धि और बनस्पति तथा जन्तु-जगत पर प्रभावों के रूप के सामने आ सकते हैं।

ग्लोबल वार्मिंग कुनिया की किनी बड़ी समस्या है, यह बात नाक आम आदमी समझ नहीं पाता है। उसे को शब्द थोड़ा टेक्निकल लगता है। इसलिए वह इसकी तह तक नहीं जाता है। लिहाज इसे नाक वैज्ञानिक पश्चियाया मानकर छोड़ दिया जाता है। ज्यादातर लोगों को लगता है कि किलहाल संसार को इससे कोई खतरा नहीं है।

भारत में भी ग्लोबल वार्मिंग नाक प्रचलित राष्ट्र नहीं है और भाग-दीड़ में तभी इहने बाते भारतीयों के लिए भी इसका कोई अधिक मतलब नहीं है। लेकिन विद्यान के कुनिया की बात करें तो ग्लोबल वार्मिंग को लेकर भविष्यवाणियों की जा रहा है। इसके 21वीं सदी का सबसे बड़ा खतरा ज्ञाता जा रहा है।

## कारण

ग्लोबल वार्मिंग के कारण होने वाले अलवायु परिवर्तन के लिये सबसे अधिक जिम्मेदार ग्रीन हाउस गैस हैं। ग्रीन हाउस गैस, वे दो गैस होती हैं जो वाहर मिल रही गर्भी आउमा को अपने अंदर सोखते हैं। ग्रीन हाउस गैसों का इस्तेमाल सामान्यतः अत्यधिक शहद फूलों में उन पौधों को गरम रखने के लिए किया जाता है जो अत्यधिक सही मौसम में खेल हो जाता है। फूलों में इन पौधों की काँच के नाक बांद घर में रखा जाता है और काँच के घर में ग्रीन हाउस गैस भर दी जाती है।

यह गैर सूख से आने वाली किरणों की गमी सीख लेती है जो पौधों को गर्म रखती है। ठीक यही प्रक्रिया पुरुषों के साथ होती है। सूख से आने वाली किरणों की गमी की कुछ मात्रा को पुरुषी द्वारा सीख लिया जाता है। इस प्रक्रिया में हमारे पथरिण में कैली गृन छाउथ गैसों का महत्वपूर्ण योगदान है।

अगर इन गैसों का अस्तित्व हमारे में न होता तो पुरुषी पर तापमान बर्तमान से काफी कम होता।

गृन छाउथ गैसों में अब से महत्वपूर्ण गैस कार्बन डाइऑक्साइड है। जिसे हम जीवित प्राणी अपने साँस के साथ उत्सर्जित करते हैं। पथरिण वैज्ञानिकों का कहना है कि पिछले कुछ वर्षों में पुरुषी पर  $CO_2$  की मात्रा लगातार बढ़ी है। वैज्ञानिकों द्वारा  $CO_2$  के उत्सर्जन और तापमान वृद्धि में गहरा संबंध बताया जाता है। सन 2006 में एक फ़िल्म 'इनकॉर्पोरेट द्रुथ' में इसके बारे में दिया गया था।

भारतीय अंतरिक्ष नायनी द्वारा 'इसरो' के पूर्व चेयरमैन और मौत के बिट्ठे प्रो. घु. आर. शब्द अपने शोध-पत्र में लिखते हैं कि अंतरिक्ष से पृथ्वी पर आपत्ति हो रही कांस्मिक विकिरण का सीधा संबंध सौर-क्रियाशीलता से होता है। अगर सूरज की क्रियाशीलता बढ़ती है तो ब्रह्माण्ड से आने वाले कांस्मिक विकिरण निचले स्तर के वादलों के निर्मण में प्रमुख भूमिका निभाता है। इस बात की प्रशंसनी यहाँ पहले स्व-समार्क और क्रिस्टेनसन नामक वैज्ञानिकों ने की थी।

वैज्ञानिक ने पाया कि सन् 1925 से सूरज की क्रियाशीलता में लगातार वृद्धि हुई। जिसके कारण पृथ्वी पर आपत्ति होने वाले कांस्मिक विकिरण में लगभग 9 प्रतिशत कमी आई है। इस विकिरण में आई कमी से पृथ्वी पर घनने वाले खास तरह के निचले स्तर के वादलों के निर्मण में भी कमी आई है। जिससे सूरज से आने वाला विकिरण सोख लिया जाता है उससे इसके कारण तापमान में वृद्धि का अनुमान लगाया जा सकता है।

## घनक परिणाम

ग्रीन हाउस गैस वह गैस हैं जो पृथ्वी के वातावरण में प्रवेश पर यहाँ का तापमान बढ़ाने में कारक बनती हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार इन गैसों का उत्सर्जन अगर इसी प्रकार चला रहा तो 21वीं शताब्दी में पृथ्वी का तापमान 3 डिग्री से 8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है। अब दोसा हुआ तो इसके परिणाम बहुत धातक होंगे। दुनिया के कई हिस्सें में बिही बर्फ की घादर जिधल जानेगी, समुद्र का जल स्तर कई फीट ऊपर तक बढ़ जाएगा। समुद्र के इस घनवे से दुनिया के कई हिस्से जलमरण हो जाएंगे, भारी तबाही मचेगी। यह तबाही किसी 'विश्वयुद्ध' या किसी 'गोस्टरोड' के पृथ्वी से टकराने के बाद होने वाली तबाही से भी अचेकर होगी। हमारे इह पृथ्वी के लिए भी यह स्थिति बहुत हानिकारक होगी।

## जागरूकता

ग्लोबल वार्मिंग को शोकने का कार्ड इलाज नहीं है। इसके बारे में सिफर जागरूकता केलाकर ही दूसरे लड़ा जा सकता है। हमें अपनी पृथकी को सही मायने में 'ग्रीन' बनाना होगा। अपने 'कार्बन फुटप्रिंट्स' को कम करना होगा।

हम अपने आस-पास के बातावरण को प्रदूषण से बचाना चुनते रखेंगे, इस पृथकी को बचाने में उतनी ही बड़ी भूमिका निभाएंगे।

संयुक्त राष्ट्र के सदस्यों ने 2015 तक नई जलवायु स्थिति कराने के लिए पहला कदम उठाया है और इस पर बातचीत शुरू की है कि तो किस तरह इस लक्ष्य को पूरा करेंगे। यह संधि विकसित और विकासशील देशों पर लागू होगा।

## गृन हाउम गैस का उत्सर्जन

माना जा रहा है कि इसकी वजह से उपर्याक उचितीय रेसिस्टानों में जमी छूटी। मैदानी दुलाकों में भी इतना गमी पड़ेगी जितनी कभी इतिहास में नहीं पड़ी, इस वजह से विभिन्न प्रकार की जानलेवा शीमारियाँ चेदा होंगी। हमें ध्यान में रखना होगा कि हम प्रकृति को इतना नाशन न कर दें कि वह हमारे अस्थिति को खत्म करने पर ही आमादा हो जाए। हमें इन सब बातों का ध्याल रखना पड़ेगा।

तापमान के इस वृद्धि से विश्व के सारे जीव - जंतु वेदात ही जाऊँगे और उनका जीवन खत्तरे में पड़ जाएगा। घेड़-घोड़ों में भी इसी तरह का घेदलव आएगा। सागर के आस-पास रहने वाली आबादी पर इसका सबसे ज्यादा असर पड़ेगा। जल स्तर ऊपर उठने के कारण सागर तट पर चौथे उद्यादातर राहर इन्हीं आगारों से समा जाऊँगे।

समुद्र में बर्बे होटे देशों और अफ्रिकी देशों ने चेतावनी देते हुए कहा है कि गैसों के उत्सर्जन में कटौती के बापदों और बलोवल वार्मिंग शेक्स के लिए उशकी जमूरत के बीच बड़ी बाई है। वैज्ञानिकों का कहना है कि यदि वर्तमान का उत्सर्जन जारी रहता है तो दुनिया का तापमात्रा  $4^{\circ}\text{C}$  बढ़ जाएगा, जबकि यू.एन.पए.सी.सी.सी. ने 2011 में  $2^{\circ}\text{C}$  को सुरक्षित अधिकतम बढ़िया घोषया है।

विकासशील देश विकसित औद्योगिक देशों से संबंध फ़िखाने की मांग कर रहे हैं। वे यूरोपीय संघ से क्योटो संधि के बायदों को पिर से दोहराने की अपील कर रहे हैं। वह अकेली छंडी है जिसमें ग्रीन हाउस गैसों में कटौती तथ की गई थी। इसके विपरीत क्योटो को पास करने वाला अमेरिका उभरते देशों से कटौती के अपने बायदों को बढ़ाने की मांग कर रहा है। आने वाले विवादों को अंकेत करते हुए ग्रीन क्लाइमेट फंड की पहली बैठक स्थापित कर दी गई है, इसका गठन गरीब देशों की मदद के लिए 10 अरब डॉलर जमा करना है।

## रोकने का उपाय

वैज्ञानिकों और पर्यावरणविदों का कहना है कि ग्लोबल वार्मिंग में कमी के लिए सुख्ख रूप से सी.एफ.सी.रॉसों का उत्तर्जन रोकना होगा और इसके लिए, प्रियं, धारा के डीशनर और दूसरे कूलिंग मशीनों का दूसरे माह कम करना होगा या प्रौद्योगिकीय मशीनों का उपयोग करना होगा जिससे सी.एफ.सी.रॉसों का विकास हो।

आधारिक इकाईयों की विभिन्नियों से निकलने वाला धुआँ हानि कारक है और इनसे निकलने वाला कार्बन डाक्युअलसाइड गमी बढ़ाता है। इन इकाईयों में प्रदूषण रोकने के आय करना होगा।

वाहनों से से निकलने वाले धुआँ का सम्भाव कम करने के लिए पर्यावरण मानकों का संकरी से पालन करना होगा।

उद्योगों और व्यापकर रासायनिक इकाईयों  
से निकलने वाले कचड़े को फिर से उपयोग  
में लाने लायक बनाने की कोशिश करनी  
होती है और प्राथमिकता के आधार पर चेताओं  
की कठाई रोकनी होती है और जंगलों के  
संरक्षण पर धूत देना होता है।

अक्षय ऊर्जा के उपयोग करना है और  
उनके उपयोग पर ध्यान देना होता है। यानी अगर  
कोयले से बनने वाली विजली के बदले  
परन ऊर्जा, सौर ऊर्जा और परविजली  
पर ध्यान दिया जाता तो बातावरण को  
सामने वाली गैसों पर नियंत्रण  
पाया जा सकता है तथा साथ ही जंगलों  
में मावा लगाने पर रोक लगानी होती।